2020 वर्षीय परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर –

शास्त्री द्वितीय खण्ड
अनिवार्य द्वितीय-पत्र
राष्ट्रभाषा हिन्दी

प्रश्न :– पथिक-पत्नी का चरित्र-चित्रण 'पथिक' काव्य ग्रंथ के आधार पर करें।

उत्तर :– कवि ने अपने काव्य 'पथिक' में पथिक-पत्नी का चरित्र-चित्रण बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है। कवि पथिक-पत्नी को 'स्वर्ग की एक किरण', कवि का 'स्वप्न' और 'विश्व का विस्मय' जैसे विशेषणों से विभूषित किया है।

पवित्रता ही पथिक-प्रिया की सर्वप्रधान विशेषता है। सौन्दर्य की इस देवी को पथिक अचानक छोड़कर चला जाता है। सती नारी की तरह विकल होकर वह अपने प्राणधन की खोज करती है। निराश होकर वह सिन्धु की गोद में लय होने के लिए समुद्र तट की ओर जा रही है, तभी उसकी दृष्टि तट पर बैठे अपने पति पर पड़ती है। वह तत्क्षण प्रिय-चरणों पर न्योछावर हो जाती है। लेकिन पथिक तो प्रकृति के सौन्दर्यावलोकन में ही निमग्न न रहता है। कुछ पल के बाद जब पथिक की आँखें खुलती हैं तो पथिक-प्रिया उससे घर लौटने के लिए प्रार्थना करती है। परन्तु वह घर लौटने से इन्कार कर देता है। पथिक-पत्नी कहती है – जिस प्राकृतिक सौन्दर्य पर आपका मन मयूर नाच रहा है, वह स्वयं तुमसे प्रेम नहीं करती है।

'ममता रहित पथिक' अपनी पत्नी को छोड़कर अन्यत्र चला जाता है। बेचारी पथिक-प्रिया ठगी-सी अपने प्रियतम को देखती रह जाती है। मुनि के आश्वासन पाकर कि तुम्हारा मिलन फिर पथिक से होगा, वह घर लौट जाती है।

पथिक अपनी पत्नी के आग्रह का तिरस्कार कर उससे भलेही दूर जाता है, लेकिन इससे उसके प्रति उस की पत्नी का प्रेम कम नहीं होता है। पति-दर्शन के लिए वह जीवन-भर विकल रहती है। वह आँखें लगायी रहती है कि कब उसके प्रियतम आयेंगे और उसकी प्यासी आँखें तृप्त होगी। प्रिय दर्शन की लालसा इन पंक्तियों में द्रष्टव्य है– "काग! साध अब पूरी कर लो चुन-चुन

शेष आगे

कर इस तन को देना छोड़ दया करके प्रियदर्शन-व्रत नयन को।
कवि कहता है कि वह प्रियदर्शन की लालसा से ही जी रही है। जब उसे यह समाचार मिलता है कि उसके प्राणेश्वर राजाज्ञा से लोहे के जंजीर मे जकड़ दिये गये हैं और उन्हें मृत्युदण्ड मिलने वाला है, तब उसकी समस्त भावनाएँ विद्रोह कर उठती हैं। अन्तिम दर्शन के लिए वह राजधानी की ओर चल पड़ती है और अपने जीवन में विफल होने से पहले वह पथिक के सामने रखे हुए विष के प्याले को उठाकर पी लेती है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि पथिक-प्रिया एक पतिव्रता पत्नी थी। अपने पति के प्यार के समक्ष वह पुत्र-स्नेह को कुछ नहीं समझती है। अबोध बच्चे को छोड़कर पति की खोज में निकल पड़ना तथा विष का प्याला उठाकर पी जाना-ये सभी इस बात के द्योतक हैं कि उसमें वात्सल्य-स्नेह का अभाव था।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ
19/12/20

2020 वर्षीय परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या-

जयद्रथ-वध शास्त्री प्रथम खण्ड - अनिवार्य द्वितीय-पत्र
कवि - मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रभाषा हिन्दी

"प्रियमृत्यु का अप्रिय महासंवाद पाकर विष भरा,
चित्रस्थ-सी निर्जीव मानो रह गई हत उत्तरा।
संज्ञा-रहित तत्काल ही फिर वह धरा पर गिर पड़ी,
उस काल मूर्च्छा भी अहो! हितकर हुई उसको बड़ी।।"

उत्तर:-

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक जयद्रथवध खण्ड काव्य के द्वितीय सर्ग से उद्धृत है। इसके रचयिता राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्त जी हैं। अभिमन्यु की मृत्यु का संवाद पांडवों के शिविर में पहुँचा तो वे सभी शोक में डूब गये। इसके बाद वह संवाद अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के पास भी पहुँचा। वह इस समाचार को जानकर थक सी रह गई।

व्याख्या- कवि का कहना है कि उत्तरा अपने प्राणप्रिये की मृत्यु का बुरा जहरीला समाचार पाकर थक सी रह गई। वह चित्र की मूर्ति के समान हो गई अर्थात मानो वह बिना जीव की हो गई। चेतनाहीन उत्तरा तत्काल ही पृथ्वी पर गिर पड़ी। उस समय मानो बेहोशी भी उसके लिए बड़ी भलाई करने वाली हुई।

विशेष- उपर्युक्त पंक्तियों में उत्तरा के थक से रह जाने का बड़ा सजीव वर्णन कवि द्वारा हुआ है। चित्रस्थ, निर्जीव, संज्ञा रहित शब्दों का प्रयोग कर कवि ने उसका साकार चित्र उभार दिया है।

'मूर्च्छा' को भी कवि ने हितकर इसलिए कहा है कि यदि वह चेतना युक्त होती तो रोती-चीखती किन्तु मूर्छित हो जाने पर वह दुःख से भी मुक्त हो गई। कवि मैथिलीशरण गुप्त ने प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से अपने प्राण प्रिये के दुःखद समाचार सुनकर उत्तरा

शेष आगे

के विलाप का सजीव चित्रण किया है। पाठक भी करुणा से भर जाते हैं।

प्रस्तुत पद में उपमा, अनुप्रास अलंकार की छटा विद्यमान है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ

19/12/20